

॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ शिखीरसकृतं अभ्यासकृतं निरुगं प्रवच ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

दुःशासनोद्वादाभिः रूपः शारद्वतस्त्रिभिः ॥ द्रोणस्तु सप्तदशभिः शरैराशीविषोपमैः ॥ १६ ॥ विविंशतिस्तु सप्तत्याकृतवर्माचसप्तभिः ॥ बृहद्वलस्तथाष्टाभिः
श्रुथामाचसप्तभिः ॥ १७ ॥ भूरिश्रवास्त्रिभिर्बाणैर्मद्रैः पद्भिराश्रुगैः ॥ द्वाभ्यां शराभ्यां शकुनिस्त्रिभिर्दुर्योधनोत्तपः ॥ १८ ॥ सनुतान्प्रतिविव्याध त्रिभिस्त्रिभि
रजिह्वगैः ॥ नृत्यन्निव महाराजचापहस्तः प्रतापवान् ॥ १९ ॥ ततोऽभिमन्युः संक्रुद्धस्त्रास्यमानस्तवात्मजैः ॥ विदर्शयन्वैसुमहच्छिखीरसकृतं बलं ॥ २० ॥ ग
रुडानिलं रंहोभिर्यंतु वाक्पयकरैर्हयैः ॥ दौतैरश्मकदायादस्त्वरमाणो ह्यवारयत् ॥ २१ ॥ विव्याध दशभिर्बाणैस्त्रिष्ठुतिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ तस्याभिमन्युर्दशभिर्ह
यान्सूतं ध्वजं शरैः ॥ २२ ॥ बाहू धनुः शिरश्चोर्व्यास्मयमानोभ्यपातयत् ॥ ततस्तस्मिन् हते वीरसौ भद्रेणाश्मकेश्वरैः ॥ २३ ॥ संचचालबलं सर्वपलायनपरायणं ॥
ततः कर्णः रूपोद्गोद्रौणिर्गाधारराट्शलः ॥ २४ ॥ शल्योभूरिश्रवाः क्रथः सोमदत्तो विविंशतिः ॥ दृषसेनः सुषेणश्च कुंडभेदी प्रतर्दनः ॥ २५ ॥ वृंदारकोल
लित्थश्च प्रबाहुर्दीर्घलोचनः ॥ दुर्योधनश्च संक्रुद्धः शरवर्षैरवाकिरन् ॥ २६ ॥ सोतिविद्धो मेहं प्वासैरभिमन्युरजिह्वगैः ॥ शरमादत्तकर्णायवर्मकायावभेदिनं
॥ २७ ॥ तस्य भित्वा तनुत्राणं दं हं निभिद्यचाश्रुगः ॥ प्राविशद्वरणं विगाहल्मीकमिव पन्नगः ॥ २८ ॥ सतेनातिप्रहारेण व्यथितो विह्वलन्निव ॥ संचचालराचानां
कर्णः क्षितिकं पेयथाचलः ॥ २९ ॥ तथान्यैर्निशितैर्बाणैः सुषेणं दीर्घलोचनं ॥ कुंडभेदिं च संक्रुद्धस्त्रिभिस्त्रिभिर्नवधीद्वली ॥ ३० ॥ कर्णस्तंपंचविंशत्यानाराचानां
समार्पयत् ॥ अश्वत्थामाच विंशत्याकृतवर्माचसप्तभिः ॥ ३१ ॥ सशराचितसर्वांगः क्रुद्धः शक्रालमजः ॥ विचरन् दृशे सैन्ये पाशहस्त इवांतकः ॥ ३२ ॥ श
ल्यं च शरवर्षेण समीपस्थमवाकिरत् ॥ उदक्रोशन्महाबाहुस्तव सैन्यानि भीषयन् ॥ ३३ ॥ ततः सविद्धोस्त्रिविदामर्मभिर्द्विरजिह्वगैः ॥ शल्यो राजन रथोपस्थे नि
षसादमुमोह च ॥ ३४ ॥ तं हि दृष्ट्वा तथा विद्धं सौ भद्रेण यशस्विना ॥ संप्राद्रवच्चर्मः सर्वाभारद्वाजस्य पश्यतः ॥ ३५ ॥ संप्रेक्ष्य तं महाबाहुं रुमपुंखैः समावृतं ॥ त्व
दीयाः प्रपलायंते मृगाः सिंहादिताइव ॥ ३६ ॥ सतुरणयशसाभिपूज्यमानः पितसुरचारणसिद्धयक्षसंघैः ॥ अवनितलगतैश्च भूतसंघैरतिविवभौदुतभुग्य
थाज्यसिक्तः ॥ ३७ ॥ इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि अभिमन्युपराक्रमे सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥